PAGE NO.:
DATE: / /

पाठ - ११

दिन: शुक्रवार
दिनांक: २६ जून, २०२०

सवैये

शब्दार्थ :-

१.	बसौं	बसना, रहना
२.	कहा बस	वश में न होना
३.	मँझारन	बीच में
४.	गिरि	पहाड़
५.	पुरंदर	इंद्र
६.	कालिंदी	यमुना
७.	कलधौत के धाम	सोने - चाँदी के महल
८.	करील	काँटेदार झाड़ी
९.	वारौं	न्योछावर करना
१०.	भावतों	अच्छा लगना
११.	अटा	कोठा, अट्टालिका
१२.	टेरि	पुकारकर बुलाना
१३.	मानुष	मनुष्य
१४.	पाहन	पत्थर
१५.	लकुटी	लाठी
१६.	कोटिक	करोड़ों
१७.	गुंज	काले - लाल रंग का छोटा पत्थर

PAGE NO. :
DATE : / /

सवैये - भावार्थ :-

१.॥ मानुष हौं तो वही रसखानि --------
कालिंदी कूल कदंब की डारन ॥

भावार्थ : इन पंक्तियों के द्वारा रसखान ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की जन्मभूमि के प्रति प्रेम प्रकट किया है। वे कहते हैं कि अगर अगले जन्म में उन्हें मनुष्य का जन्म मिलेगा तो वे गोकुल के ग्वालों के बीच रहने का अवसर चाहेंगे। अगर पशु के रूप में जन्म मिलता है तो वो नन्द की गायों के बीच रहकर चरना चाहेंगे। अगर पत्थर बनना पड़ा तो वे गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं। अगर पक्षी बने तो यमुना किनारे कदंब की डाल पर बसेरा डालेंगे।

२.॥ या लकुटी अरु कामरिया --------
-------- करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥

भावार्थ : रसखान कहते हैं कि गाय चराने के लिए वन जाते हुए कृष्ण के हाथ में जो लाठी और कंधे पर कंबल है, उसे पाने के लिए वे तीनो लोकों के सुख को भी त्याग सकते हैं। वे नंद कि गाय चराने के सुख के आगे आठों सिद्धियों और नवों निधियों के सुख को भुला सकते हैं। वे कहते हैं कि कब मैं अपनी आँखों से ब्रज के वन, बाग

PAGE NO.:
DATE: / /

और तलाबों को निहार सकूँगा। वे कँटेदार झाड़ियों से ढकी ब्रजभूमि में रहने के लिए करोड़ों स्वर्ण महलों को न्योछावर कर सकते हैं।

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं - - - - - - - - - - -
पं.॥
- - - - - - - - - - - धरी अधरा न धरौंगी ॥

भावार्थ : इस छंद में कृष्ण के रूप सौंदर्य के प्रति गोपियों की मुग्धता का चित्रण है। एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि वह सिर पर मोर पंख पहन ले, गुंज की माला पहनें, पीले वस्त्र धारण करें, हाथ में लाठी ले व ग्वालों के साथ गाये चराने जाए। दूसरी गोपी कहती है कि कृष्ण मुझे भी प्रिय हैं। इसलिए मैं यह स्वांग रचूँगी किंतु मुरलीधर के होठों से लगी मुरली अपने होठों से नहीं लगाऊँगी ॥

काननि दै अँगुरी रहिबो - - - - - - - - - - -
प.॥
- - - - - - - - - - न जैहे, न जैहे, न जैहे ॥

भावार्थ : गोपी कहती है कि जब कृष्ण मंद - मंद बंसी बजाते हैं तो मैं अपने कानों में उँगलियाँ डाल लेती हूँ। श्रीकृष्ण अटारी पर चढ़कर गायों को मुरली का मधुर गीत सुनाते हैं तब भी वह उस धुन को अनसुना करना

चाहती है। गोपी कहती है कि हे माँ कल अगर ब्रजवासी तुझसे कितना भी उलाहना दें कि उन्होंने मुझे बहुत समझाया किंतु मैंने कृष्ण को निहारना नहीं छोड़ा, तो तुम मुझे दोषी न मानना क्योंकि कृष्ण के इस चेहरे की मुस्कान इतनी मनमोहक होती है कि मैं अपने आप को नहीं सम्हाल पाती ॥

प्र० / उ० :-

१. ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उ० - कवि अगले जन्म में भी ब्रजभूमि में ही जन्म लेना चाहते हैं, फिर चाहे वो मनुष्य, पशु, पत्थर, पक्षी कोई भी रूप हो। वे काँटेदार झाड़ियों से ढकी ब्रजभूमि में रहने के लिए करोड़ों सोने के महलों को भी छोड़ सकते हैं।

२. कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?

उ० - क्योंकि इनके साथ कृष्ण की यादें जुड़ी हैं। कभी कृष्ण इन्हीं में विहार किया करते थे इसलिए कवि उन्हें देखकर धन्य हो जाते हैं।

PAGE NO.:
DATE: / /

13. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है ?

उ०- कृष्ण के लाठी व कंबल डाले हुए रूप पर रसखान इतने मुग्ध हैं कि वह संसार के समस्त सुखों को न्योछावर करने को तैयार हैं। आराध्य के द्वारा धारण की गई वस्तुओं का मूल्य भक्त के लिए अनमोल है।

14. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था ? अपने शब्दों में लिखो

उ०- सखी ने गोपी आग्रह किया थां कि वह कृष्ण के समान सर पर मोरपंखों का मुकुट धारण करें। गले में गुंजों की माला पहने। तन पर पीले वस्त्र पहनें। हाथों में लाठी व पशुओं के संग विचरण करें।

15. आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ों के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है ?

उ०- मेरे विचार से रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त हैं। उन्हें किसी भी रूप में कृष्ण सान्निध्य प्राप्त करना है। इसमें उनकी भक्ति - भावना तृप्त होती है। इसलिए वे पशु, पक्षी या पहाड़ बनकर भी कृष्ण का संपर्क चाहते हैं।

प्र॰ 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?

उ०- 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में 'क' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।